Gupta period (part -9)

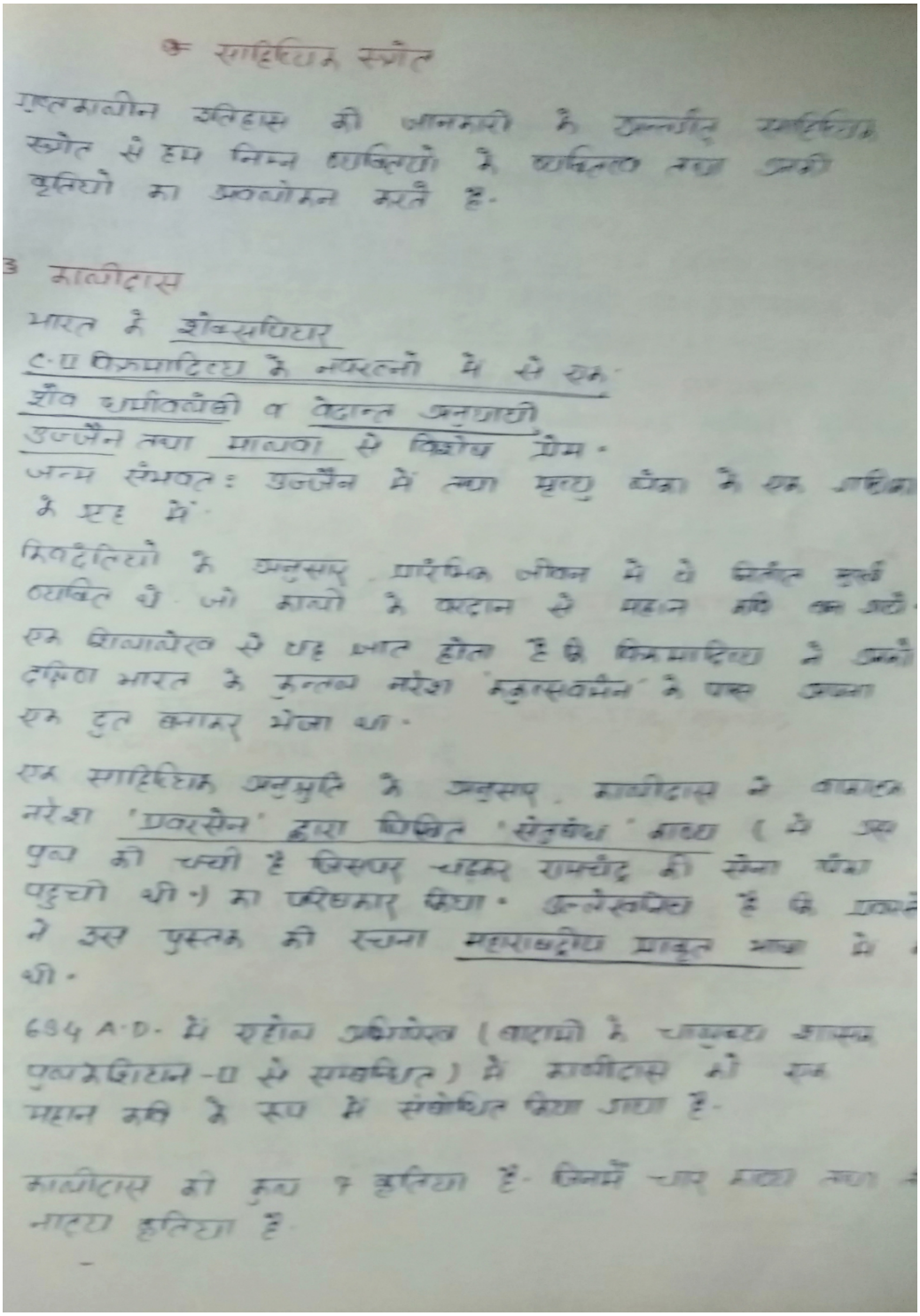

साहित्यिक स्रोत

गुप्तकालीन इतिहास की जानकारी के अन्तर्गत साहित्यिक स्रोत से हम निम्न व्यक्तियों के व्यक्तित्व तथा उनकी कृतियों का अवलोकन करते हैं-

3 कालीदास

भारत के शेक्सपियर

C.II विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक

शैव धर्मावलंबी व वेदान्त अनुयायी

उज्जैन तथा मालवा से विशेष प्रेम·

जन्म संभवतः उज्जैन में तथा मृत्यु श्रीलंका के एक गणिका के गृह में·

किवदंतियों के अनुसार प्रारंभिक जीवन में वे नितांत मूर्ख व्यक्ति थे जो काली के वरदान से महान कवि बन गये·

एक शिलालेख से यह ज्ञात होता है कि विक्रमादित्य ने उनको दक्षिण भारत के कुन्तल नरेश 'ककुस्थवर्मन' के पास अपना एक दूत बनाकर भेजा था·

एक साहित्यिक अनुश्रुति के अनुसार कालीदास ने वाकाटक नरेश 'प्रवरसेन' द्वारा लिखित 'सेतुबंध' काव्य (ये उस पुल की चर्चा है जिसपर चढ़कर रामचंद्र की सेना लंका पहुची थी·) का परिष्कार किया· उल्लेखनीय है कि प्रवरसेन ने उस पुस्तक की रचना महाराष्ट्रीय प्राकृत भाषा में की थी·

634 A·D· में एहोल अभिलेख (बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशियन -II से सम्बन्धित) में कालीदास को एक महान कवि के रूप में संबोधित किया जाता है-

कालीदास की कुल 7 कृतियां हैं- जिनमें चार काव्य तथा 3 नाट्य कृतियां हैं·

- काव्य

रघुवंशम् - महाकाव्य

कुमार संभवम् - महाकाव्य - यह कालीदास की अद्वितीय रचना है. यह 18 सर्गों में विभक्त है. इ शिव-पार्वती के पुत्र कुमार कार्तिकेय का जन्म तथा तारकासुर की कथा का वर्णन है. मल्लिनाथ जैसे टिकाकार ने इस काव्य में 8 सर्गों पर टिका लिखा है.

मेघदूतम् - इसमें विरह विधुर और अपनी प्रिय पत्नि के वियोग का वर्णन है.

ऋतुसंहारम् - गीति काव्य

- नाटक

मालविकाग्निमित्रम् - यह कालीदास का प्रथम नाटक माना जाता है.

अभिज्ञान शाकुन्तलम् - यह कालीदास की popular कृति है. यह महाभारत की प्रख्यात दुष्यंत :- शाकुन्तला की कथा का चित्रण, कालीदास ने अपने तरीके से किया है.

अभिज्ञान शाकुन्तलम् का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद विलियम जोंस ने 1789 A.D. में किया था. उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक का प्रभाव जर्मनी के प्रसिद्ध कवि 'गेटे' की रचना 'फाउस्ट' पर पड़ा.

विक्रमोर्वशीयम् - कुछ विचारक इसे कालीदास का अंतिम नाटक मानते हैं. इसमें अप्सरा उर्वशी और राजा पुरुरवा की प्रणय कथा प्रदर्शित की गयी है.